नेपाल का प्राचीन इतिहास विभिन्न राजवंशों, सांस्कृतिक प्रभावों और धार्मिक परंपराओं से समृद्ध है। यह इतिहास मुख्य रूप से किरात वंश, लिच्छवि वंश और प्रारंभिक ठकुरी शासकों के कालखंड में विभाजित किया जा सकता है।

---

1. किरात वंश (≈800 BCE - 300 CE)

नेपाल के सबसे पुराने ज्ञात शासक किरात थे, जो तिब्बती-बर्मी मूल के माने जाते हैं।

किरातों का उल्लेख महाभारत और अन्य प्राचीन ग्रंथों में मिलता है।

नेपाल की राजधानी काठमांडू घाटी में उनकी बसाहट थी।

कहा जाता है कि किरातों के 29 राजा हुए, जिनमें यलम्बर (पहले राजा) का विशेष महत्व था।

गौतम बुद्ध के समय (≈5वीं-6वीं सदी BCE) में नेपाल पर किरातों का शासन था और वे बौद्ध धर्म के प्रति सहिष्णु थे।

सम्राट अशोक (≈3वीं सदी BCE) ने नेपाल में आकर स्तूपों का निर्माण कराया, जिससे पता चलता है कि इस समय नेपाल बौद्ध धर्म से प्रभावित था।

---

2. लिच्छवि वंश (≈400 CE - 750 CE)

यह नेपाल के इतिहास का एक स्वर्ण युग माना जाता है, जब व्यापार, कला, धर्म और संस्कृति का विकास हुआ।

लिच्छवि मूल रूप से भारत के वैशाली (बिहार) से आए थे।

सबसे प्रसिद्ध राजा मानदेव (464-505 CE) थे, जिन्होंने कई मंदिरों और जलाशयों का निर्माण करवाया।

इस काल में हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म दोनों फले-फूले।

नेपाल में पहली बार संस्कृत शिलालेख मिले, जिनसे प्रशासन और समाज की जानकारी मिलती है।

इस काल में चीन के साथ नेपाल का व्यापार और सांस्कृतिक संबंध भी बढ़े।

---

3. प्रारंभिक ठकुरी वंश (≈750 CE - 1200 CE)

लिच्छवियों के बाद ठकुरी वंश का शासन आया, जो नेपाल में धीरे-धीरे शक्ति प्राप्त कर रहे थे।

इस काल में नेपाल कई छोटे-छोटे राज्यों में बंट गया।

बौद्ध धर्म का प्रभाव कम हुआ और हिंदू धर्म मुख्य धर्म के रूप में उभरा।

सबसे प्रमुख ठकुरी शासक राजा गुणकामदेव (≈10वीं सदी CE) थे, जिन्होंने काठमांडू शहर की नींव रखी।

---

धार्मिक और सांस्कृतिक प्रभाव

बौद्ध धर्म: सम्राट अशोक और लिच्छवियों के समय नेपाल में बौद्ध धर्म का प्रभाव बढ़ा।

हिंदू धर्म: धीरे-धीरे नेपाल में हिंदू धर्म का वर्चस्व बढ़ा, और कई मंदिरों का निर्माण हुआ।

कला और वास्तुकला: लिच्छवि और ठकुरी काल में नेपाल की विशिष्ट मंदिर वास्तुकला विकसित हुई।

---

निष्कर्ष

नेपाल का प्राचीन इतिहास किरातों की योद्धा परंपरा, लिच्छवियों के सांस्कृतिक उत्कर्ष और ठकुरी वंश के धार्मिक पुनरुत्थान से जुड़ा है। इस काल में नेपाल ने हिंदू और बौद्ध दोनों परंपराओं को आत्मसात किया और अपने विशिष्ट सांस्कृतिक स्वरूप को विकसित किया।